Avyakt Milan: October 24, 2013

Om Shanti Divine Angels!!!

Points to Churn: October 25, 2013

Praise of the Father: The Unlimited Father...the Purifier...the Ocean of Knowledge...the Creator of the pure world, heaven...the Supreme Father the Supreme Soul...the Bridegroom...

Knowledge: Knowledge is very entertaining, therefore, study in an entertaining way and don't become confused. The meaning of "Hum so" is not that, "I, a soul, am the Supreme Soul". No. "I, a Brahmin, will then become a deity". You will continue to take rebirth.

You souls have your own chariots. I am incorporeal. Only once in the cycle do I need a chariot. I borrow the old experienced chariot of Brahma. Adi Dev is Prajapita Brahma and his Father is Shiva. The Father only wants the chariot of Brahma through which he can create the Brahmin people. The Brahmin clan is the most elevated clan. The highest of all is the topknot of Brahmins.

Yoga: You are doing Raj Yoga tapasya for liberation-in-life, for the kingdom. Become a Raj Rishi and do tapasya. To belong to the Father means to forget the awareness of your body. Practice becoming bodiless. Consider yourselves to be incorporeal souls and remember the Father. Become a firm yogi and a spinner of the discus of self-realization. The Father shows you a very easy method: Remember Me and your sins will be absolved and you will come to Me.

Dharna: Become those with divine intellects from those with stone intellects, conquer the five vices, and become full of all divine virtues, sixteen celestial degrees full and completely vice less worthy of worship deities. Color your companions with the Father's company and you will not be colored by their company. Make your life like a diamond in this last birth and thereby become one who plays a hero part throughout the whole cycle.

Service: I have to do service so that Bharat becomes pure through the directions of Shri Shri Shiva. In order to enter the rosary, that is, worthy of worship, do service the same as the father.

Points of Self Respect: Rajyogi...Rajrishi...Shiv Shakti...brides...Brahmins, the mouth-born creations of Brahma...Master knowledge-full...the spinners of the discus of self realization... ones who claim the right to become rulers of the globe...

ॐ शान्ति दिव्य फरिश्ते !!!

विचार सागर मंथन: October 25, 2013

बाबा की महिमा: बेहद का बाप... पतित-पावन... ज्ञान का सागर... पावन सृष्टि स्वर्ग का रचयिता...परमपिता परमात्मा... सुप्रीम फादर... साजन...

ज्ञान: नॉलेज बड़ी मज़े की है, इसलिए रमणीकता से पढ़ना है, मूंझना नहीं है। हम सो अर्थ यह नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा हैं, नहीं। हम सो ब्राह्मण, सो देवता बनेंगे। पुनर्जन्म लेते आयेंगे।

तुम आत्माओं को अपना-अपना रथ है, मैं हूँ निराकार, मुझे भी कल्प में एक ही बार रथ चाहिए, मैं ब्रह्मा का अनुभवी वृद्ध रथ उधार लेता हूँ" आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा है, उनका बाप है शिव। बाप को तो ब्रह्मा का ही रथ चाहिए जिससे ब्राह्मणों की प्रजा रचे। ब्राह्मणों का है सर्वोत्तम कुल। ऊंच ते ऊंच है ब्राह्मणों की चोटी।

योग : तुम जीवनमुक्ति, राजाई के लिए राजयोग की तपस्या कर रहे हो। राजऋषि बन तपस्या करनी है। बाप का बनना माना ही शरीर का भान भूलना। अशरीरी बनने का अभ्यास करो। अपने को निराकारी आत्मा समझ बाप को याद करो। पक्का योगी और स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। बाप बिल्कुल सहज रास्ता

बताते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भी कट जायेंगे और मेरे पास भी आ जायेंगे।

धारणा : पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि बन 5 विकारों पर जीत पहन कर सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्वीकारी पूजनीय देवता बनना है| अपने साथियों को भी बाप के संग का रंग लगाओ तो उनके संग का रंग आपको नहीं लगेगा। इस अन्तिम जन्म में हीरे तुल्य जीवन बनाने से सारे कल्प के अन्दर हीरो पार्ट बजाने वाले बन जाना है |

सेवा : मुझे तो सर्विस करनी है तो श्री श्री शिव की मत से भारत पावन बनना है। पूज्यनीय माला में आने के लिए बाप समान सर्विस करनी है।

स्वमान : राजयोगी ...राजऋषि... शिव शक्ति... सजनी... ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों... मास्टर नॉलेजफुल...स्वदर्शन चक्रधारी... चक्रवर्ती राज्य-भाग्य के अधिकारी...

October 25, 2013

आज का वरदान (TODAY'S BLESSING)

मास्टर नॉलेजफुल बन 5 हजार वर्ष की जन्मपत्री को जानने वाले स्वदर्शन चक्रधार

May you be a spinner of the discus of self-realisation and know the horoscope 5000 years by becoming master knowledge-full.

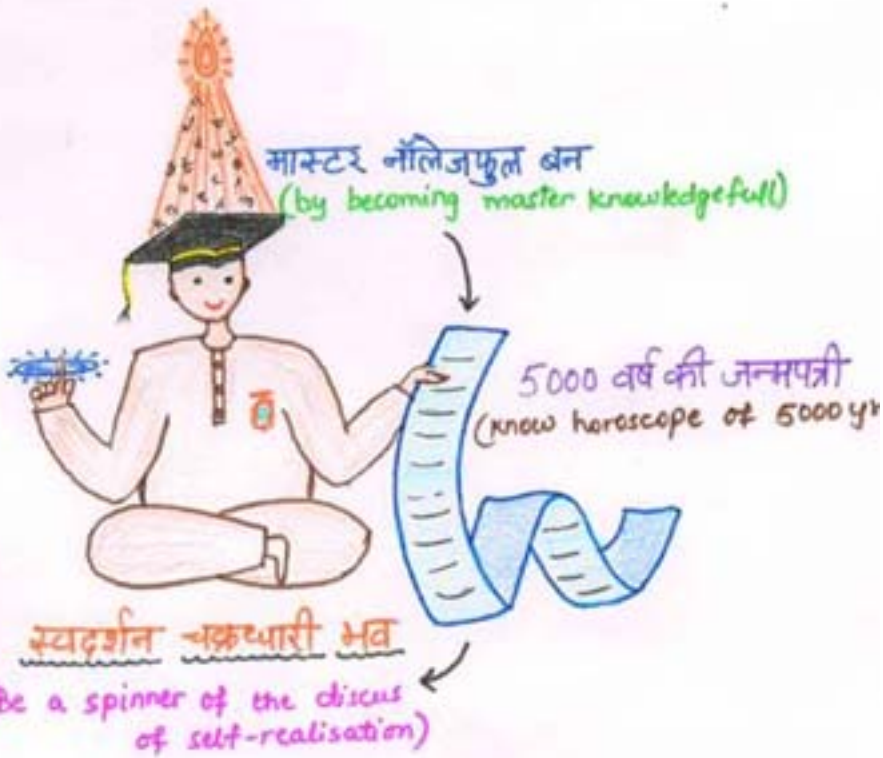

Song: Om namah Shivay ओम् नमो शिवाए..... Salutations to Shiva….

25-10-2013:

Essence: Sweet children, you souls have your own chariots. I am incorporeal. Only once in the cycle do I need a chariot. I borrow the old experienced chariot of Brahma.

Question: On the basis of what faith is it very easy to forget the awareness of the body?

Answer: You children have said with faith: Baba, I now belong to You.

Therefore, to belong to the Father means to forget the awareness of your body. Just as Shiv Baba enters this chariot and then leaves, in the same way, you children also have to practice entering your chariots and then leaving. Practice becoming bodiless. It shouldn't be difficult to do this. Consider yourselves to be incorporeal souls and remember the Father.

Song: Salutations to Shiva.

Essence for dharna:

1. Become a Raj Rishi and do tapasya. In order to enter the rosary that is worthy of worship, do service the same as the father. Become a firm yogi.

2. Knowledge is very entertaining. Therefore, study in an entertaining way and don't become confused.

Blessing: May you be a spinner of the discus of self-realization and know the horoscope of 5000 years by becoming master knowledge-full.

Those who become spinners of the discus of self-realization at this time claim the right to become rulers of the globe in the future kingdom. A spinner of the discus of self-realization means one who knows all their different parts in the whole cycle. Particularly now, at this time, children know their horoscopes of 5000 years and have become master knowledge-full. Everyone now knows the special point of making your life like a diamond in this last birth and thereby becoming one who plays a hero part throughout the whole cycle.

Slogan: Color your companions with the Father's company and you will not be colored by their company.

25-10-2013:

सार:- "मीठे-बच्चे - तुम आत्माओं को अपना-अपना रथ है, मैं हूँ निराकार, मुझे भी कल्प में एक ही बार रथ चाहिए, मैं ब्रह्मा का अनुभवी वृद्ध रथ उधार लेता हूँ"

प्रश्न:- किस निश्चय के आधार पर शरीर का भान भूलना अति सहज है?

उत्तर:- तुम बच्चों ने निश्चय से कहा - बाबा, हम आपके बन गये, तो बाप का बनना माना ही शरीर का भान भूलना। जैसे शिवबाबा इस रथ पर आता और चला जाता, ऐसे तुम बच्चे भी प्रैक्टिस करो इस रथ पर आने-जाने की। अशरीरी बनने का अभ्यास करो। इसमें मुश्किल का अनुभव नहीं होना चाहिए। अपने को निराकारी आत्मा समझ बाप को याद करो।

गीत:- ॐ नमो शिवाय .....

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१) राजऋषि बन तपस्या करनी है। पूज्यनीय माला में आने के लिए बाप समान सर्विस करनी है। पक्का योगी बनना है।

२) नॉलेज बड़ी मज़े की है, इसलिए रमणीकता से पढ़ना है, मूंझना नहीं है।

वरदान:- मास्टर नॉलेजफुल बन 5 हजार वर्ष की जन्मपत्री को जानने वाले स्वदर्शन चक्रधारी भव।

जो अभी स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं वही भविष्य में चक्रवर्ती राज्य-भाग्य के अधिकारी बनते हैं। स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् अपने सारे चक्र के अन्दर सर्व भिन्न-भिन्न पार्ट को जानने वाले। आप बच्चे विशेष इस समय 5 हजार वर्ष की जन्मपत्री को जानकर मास्टर नॉलेजफुल बन गये। सभी ने यह विशेष बात जान ली कि इस अन्तिम जन्म में हीरे तुल्य जीवन बनाने से सारे कल्प के अन्दर हीरो पार्ट बजाने वाले बन जाते हैं।

स्लोगन:- अपने साथियों को भी बाप के संग का रंग लगाओ तो उनके संग का रंग आपको नहीं लगेगा।